CHHATTISGARH

34

B.1. तारईमारडीह (कोरबा, छत्तीसगढ़) में हररयाली

पानी एक सामाजिक मुद्दा है पानी के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। पानी वह प्राकृतिक स्त्रोत है जिस पर सभ्यताओं का विकास हुआ । आवश्कता इस बात है कि पानी का उचित रूप से संरक्षण कर उसका समान वितरण किया जाये। कोरबा जिले के अंतर्गत जिला जिला मुख्यालय से लगभग 50 किमी दूर स्थित ग्राम पंचायत- तौलीपानी का आश्रित ग्राम तारईमारडीह है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के साथ ही अत्यन्त गरीबी व आत्मनिर्भरता का आभाव रहा है तथा क्षेत्र में अल्प वर्षा के कारण किसान धान की खरीफ फसल नहीं ले पाते तथा गांव के किनारे बीजाखर्रा नाम का नाला होने के बाद भी किसान उसका लाभ नहीं ले पाते थे तथा नाले के किनारे के खेत वीरान नजर आते थे।

आश्रित ग्राम तराईमारडीह के किनारे स्थित
बीजाखर्रा नाला में कई बार ग्रामीणों
द्वारा जिला प्रशासन से बांध निर्माण का
आवेदन किया गया साथ ही जल संसाधन
विभाग द्वारा 40 से 50 लाख रूपये की लागत से भी बांध निर्माण में असहमति दर्शायी। जलग्रहण मिशन की टीम द्वारा निरीक्षण के
उपरांत उक्त नाले में केचमेंट दूर
होने के साथ ही नाले की गहराई 45
फीट होने पर भी बंधान के संबंध में
ग्रामीणों की बैठक लेकर आवश्यक चर्चा
की तथा ग्रामीणों को पूरी निष्ठा व

लगन से कार्य में लगाकर बीजाखर्रा नाला पर मिट्टी का 40 फीट ऊॅचा बांध का निर्माण मात्र 2 लाख 61 हजार रूपये में किया गया। साथ ही बांध की मजबूती को ध्यान में रखते हुए उसमें दोनो किनारों पर उलट नाली का निर्माण किया गया। जिसमे ंन सिर्फ गर्मी में बरसात के तेज बहाव के पानी में भी बांध सुरक्षित खड़ा है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय के जलागम काययक्रम के अंतगयत, rkSyhikyh ds vkfJr xzke rjkbZekjMhg ds chtk[kjkZ ukyk esa 40 QhV maps feV~Vh] cksYMj o ydMh ds

छवि 1: ममट्टी का ४० फीट ऊँचा बांध

35

इस्तेमाल से निर्मित बांध की वजह से न सिर्फ किसानों ने 60 एकड़ क्षेत्रफल में रबी की फसल बल्कि बांध से खेतों तक पानी ले जाने हेतु नाली निर्माण कर खरीफ का भी उत्पादन प्रारंभ किया तथा अपने आय में वृद्धि की। बीजाखर्रा नाला का बंधान इन किसानों के जीवन में वरदान लेकर आया है। आज इन किसानों के जीवन में चहुंओर हरियाली आ गई है।

कार्य मूल्यांकन एवं तथ्यः-

मिलीवाटरशेड क्र 4ह2क2तध्4ह2 व क1इध्4ह2ब2ब6इ के अंतर्गत तराईमारडीह में बीजाखर्रा नाला पर बंधान से 60 एकड़ क्षेत्रफल में रबी एवं खरीफ की द्विफसलीय खेती सफलतापूर्वक की जाने लगी। जिससे किसान बलदेव सिंंह, धरम सिंह, श्रीमती शनिरोबाई, धनीराम, साधराम, रामप्रसाद, जगेश्वर सिंह, अच्छेराम, जहानी सिंह एवं सहसराम जैसे अनेक किसानांें के खेतों में बारहों महीने हरियाली परिलक्षित हो रही है। ग्राम पंचायत तौलीपाली में स्थित बड़कामुडा तालाब का 1 लाख 20 हजार की लागत से जीर्णोद्धार वे उन्नयन किया गया जिसके फलस्वरूप भीषण गर्मी में भी ग्रामीणों को भरपूर पानी मिलता है। जिसकी वजह से निस्तारी तथा प्यासे ममेशिवों हेतु भी पर्याप्त पानी की उपलब्धता बनी रहती है।

छवि 2: लहलहाती धान की फसल छवि 3: पररयोजना के अंधर ननममयत नाला

छवि 5: क ंएके ककनारे खड़ीपांचोबाई

36

ग्राम पंचायत तौलीपाली के अधिनस्थ ग्राम धोबनीमार में 60 हजार रूपये की लागत से कुएं का निर्माण किया गया, जिसमें भीषण गर्मी में भी लगभग 6 फीट पानी रहता है। जिसका उपयोग कर श्रीमती पांचोबाई आदि ग्रामीणों ने अपनी बाड़ी में सब्जी का उत्पादन कर आय में वृद्धि कर रहे हैं।

ग्राम पंचायत चचिया में केवराडोली पर परकोलेशन टैंक का निर्माण कराया गया। टैंक निर्माण के पूर्व जंगल का पानी व्यर्थ बह जाता था। जो कि परकोलेशन टैंक निर्माण के बाद पानी रूकने लगा अर्थात सासपास के खेत रिचार्ज हो रहे हैं। जिसकी उपयोगिता स्वरूप रामलाल, रामनाथ, धनसाय, दुबराज सिंह, जोधन सिंह, मयाराम, गजतरा व अन्य किसानों को खेती में लाभ मिल रहा है।

ग्राम चचिया में 60 हजार रूपये की लागत से कुएं का निर्माण किया गया जिसके जल का उपयोग उपयोग करके चंद्रशेखर सिंह जैसे किसानों ने अपनी बाड़ी में सब्जी का उत्पादन प्रारंभ कर अपनी जीवन शैली में सुधार किया।

ग्राम चचिया में मात्र 7 हजार रूपये की लागत से गोबर
गैस संयंत्र का निर्माण किया गया जिससे भोजन पकाने
हेतु लकड़ी की चिंता से मुक्ति मिली तथा गैस से
भोजन पकाना प्रारंभ हुआ और उससे मिलने
वाली खाद का उपयोग सब्जी बाड़ी में कर अधिक
उन्नत फसल का उत्पादन प्रारंभ किया गया।

छवि 6: केंिराडोलीमेंतैयारपारक लेशनटैंक छवि 7: चन्द्रशेखरकीबाड़ीमेंतैयारक ंआ

छवि 4: तालाब में नहाता ग्रामीण

छवि 8: चचचया में लगा गोबर गैस संयंत्र

37

ग्राम पंचायत चचिया व तौलीपाली में जलग्रहण
के अंतर्गत किये गये कार्यो के फलस्वरूप
ग्रामवासियों ने न सिर्फ दो
फसल लेना प्रारंभ कर दिया बल्कि सिंचाई
का रकबा भी बढ़ा साथ ही बाड़ी में सब्जी
आदि का उत्पादन कर अपनी आय में वृद्धि की
है। ग्रामवासियों व किसानों की
प्रगति से प्रभावित हो आस-पास के
ग्रामों यथा रनबहरा, रक्साढोंढ़ा आदि
के किसानो ने भी नाली निर्माण कर सिचाई
का रकबा बढ़ाने हेतु मांग की तथा अल्प
वर्षा की स्थिति में खेती हेतु पानी की
उपलब्धता सुनिश्चित करने की चाह प्रदर्शित की है। ग्रामवासियों के सहयोग से निर्मित क्षेत्र का 40 फीट ऊॅचा मिट्टी का बांध न सिर्फ सबसे उंचा बांध है बल्कि यह विकासखण्ड तथा जिले के लिए भी बड़ी उपब्धि है।

38

ठण्2ण् सफलता की कहानी - मिली वाटरशेड भिरावंड, कोण्ड़ागांव

बस्तर जिले के विकास खंड कोंडागांव में भिरावंड वाटरशेड (कोड क्रमांक 4म्2थ्2ब्, डी.पी.ए.पी. बैच-12) की सीमा जगदलपुर - रायपुर राजमार्ग क्रंमाक - 43 पर कोण्डागांव तहसील से पूर्व दिशा में लगभग 16 कि.मी. से प्राप्त होती है। इस जल ग्रहण क्षेत्र का कुल क्षे़त्रफल 4919 हे. है। जिसमें से 2500 हे. क्षेत्रफल उपचार हेतु प्रस्तावित है। सामान्यतः जलग्रहण क्षेत्र की स्थलाकृति समतल है लेकिन कहीं-कहीं उॅंची-नीची भू-आकृति पायी गयी है। इस क्षेत्र की मिट्टीयों का निर्माण सेंडस्टोन, ग्रेनाइट, शेल, सीस एवं क्ले स्टोन आदि चट्टानों से हुआ है। मिट्टी की गहराई कम से मध्यम एवं अधिक ऑंकी गई।मिली जलग्रहण क्षेत्र भिरावंड की भौगोलिक स्थिति विकासखंड कोण्डागॉंव , जिला- बस्तर, संभाग बस्तर में उत्तरी अक्षांश 820

3

से 820

13 एवं पूर्वी देशांश 190

5 से 190

9 के मध्य है। इसकी समुद्र तल से
उॅचाई लगभग 595 मीटर है। यहॉं की औसत वार्षिक वर्षा 1350 मिमी.है। इस क्षेत्र में लगभग 70-80 प्रतिशत भूमि पर कृषि हो रही है। इस क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति की आबादी लगभग (85 प्रतिशत) है और अनुसूचित जाति अन्य पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग की आबादी बहुत कम है। मिलीवाटर शेड का क्षेत्रफल रिज लाइन से नाले तक 2 से 20 प्रतिशत ढाल पर है। क्षेत्र में सिंचाई के साधन नगण्य है। इस क्षे़त्र में धान मुख्य फसल है एवं उच्चहन भूमि में लधु धान्य फसलों की खेती की जाती है।

जजले की izeq[k leL;kयों जैसे is;ty ds lkFk&lkFk flpkabZ ds lk/kuksa dk vHkko; Qly] lCth ,oa Qynkj ikS/kksa dh mUur fdLeksa dk vHkko; mUur d`f"k rdfudh Kku ,oa d`f"k;a+=ksa dk vHkko; o"kkZ dky esa ikuh ds rst cgko ds dkj.k Hkwfe dVko ,oa NksVh NksVh ukfy;ksa dk fuekZ.k; [kjhQ ds ckn jch Qlyksa fd dkLr gsrq o"kkZ ty laj{k.k ,oa lajpukvksa dk vHkko; iM+r Hkwfe ,oa NksVh igkfM;ksa ij okuLifrd vkoj.k dk vHkko; Hkwfeghu d`"kdksa ds ikl thfodksiktZu lalk/kuksa dk vHkko; Hkwfe esa tSfod moZjdksa dh deh; Pkkjkxkg ds vHkko esa eosf’k;ksa ds ikSf"Vd vkgkj esa deha; mUur uLy ds ikyrw tkuojksa tSls& xk;] cdjh] HkSal] lwvj bR;kfna dh deha; nkyksa ,oa lCth;ksa dk mRiknu की vR;ar dमी के कारण गांि का विकास नहीं ह आ हैA

इन समस्याओं के निवारण हेतु ग्रामीण विकास मंत्रालय के जलग्रहण विकास कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित कार्य किये गए -

Hkwfe m)kj ,oa Hkwfe laj{k.k gsrq fjt ykbZu {ks= esa LVªsxMZ dUVwj VsªfUpx dsVy izksVd'ku Vsaªp] dUVhU;ql dUVwj Vsaªp] vjnu xfy lyx] cksYMj psd lajpukvksa dk fuekZ.k किया गयाA

Lkrgh ty laxzg.k gsrq QkeZ ikS.M] Mcjh ,oa iDdk ukyk ca/ku dk fuekZ.k ; Hkwfexr ty laxzg.k gsrq ijdksys'ku Vsad ,oa lksd fiV dk fuekZ.k किया गयाA

ouhdj.k ,oa Qynkj o`{kkjksi.k- TkykÅ iztkfr ds varZxr lqccqy vdsf'k;k ,oa vtqZu rFkk Qynkj ikS/kksa ds varZxr dktw] vke] equxk] ifirk] uhcwa] fpdw] ukfj;y] dsyk vkfn dk jksi.k किया गयाA

Pkkjkxkg fodkl gsrw LVkbZyks gsesVk] cjlhe] fnukukFk ?kkalksa dk jksi.k किया गयाA

LVkiMse] rkykc] dqWavk fuekZ.k vkfn)kjk flpkabZ lqfo/kkvksa esa foLrkj dj f)Qlyh; {ks=Qy esa o`f) हुई हैA

Qly ,oa lCth izn'kZu - mUur d`f"k rdfudh dk izn'kZu] izFke iafDr izn'kZu] vfxze iafDr izn'kZu] izf'k{k.k] iz{ks= Hkze.k vkfn )kjk Qly ,oa lCth mRiknu esa o`f) हुई हैA

ukMsi ,oa dspwavk Vkadk fuekZ.k - e`nk esa tSfod inkFkksZ dh o`f) ,oa dqM+k&djdV o xkscj [kkn dks mUur [kkn cukus ds fy, ukMsi ,oa dspwavk Vkadksa dk fuekZ.k किया गयाA

cr[k ,oa eqxhZ ikyu - xzkfe.kksa dks eNyh ikyu] eqxhZ] cr[k ikyu] e'k:e mRiknu vkfn xfrfof/k;ka] lkef;d izf'k{k.k)kjk lapkfyr dj Lokoyafcr djने का प्रयास किया गयाA

fofHkUu ty xzg.k {ks=ksa dk Hkze.k] izf'k{k.k dk;Zdze] Hkwfe ,oa ty laaj{k.k fnol] fdlku fnol] izn'kZfu;ksa dk vk;kstu] ;qok tkx`fr ,oa lkaLd`frd eap xBu] Lolgk;rk lewgksa dk xBu] dk;Z ppkZ] lHkkvksa] xksf"B;ksa ,oa pkSikyksa dk vk;kstu dj fofHkUu lkeqnkf;d xfrfof/k;ksa dk lapkyu किया गयाA

40

इन सबके ifj.kke ,oa izHkko स्रिुप Hkwfe laj{k.k lajpukvksa ds fuekZ.k ls Hkwfe dVko esa deha ds dkj.k vuqi;ksxh Hkwfe ij d`f"k dk;Z esa o`f) gqbZA Tky laj{k.k ,oa laxzg.k lajpukvksa ds fuekZ.k ls Hkw&ty laoZ/ku ,oa laj{k.k)kjk f)Qlyh; jdcs esa o`f) ,oa o"kkZ ty dk leqfpr mi;ksx ह आA TkykÅ ,oa Qynkj ikS/kksa ds o`{kkjksi.k)kjk Hkw vkPNknu] baZ/ku izkfIr] ikfjokfjd iksf"Vd iwfrZ ds lkFk&lkFk vfrfjDr vk; esa o`f) ह ईA iM+r Hkwfe ij pkjkxkg mRiknu )kjk Ik’kqvksa dks iksf"Vd pkjs dh o"kZHkj miyC/krk का साधन प्राप्त ह आA mUur d`f"k rdfudh izn’kZu ,oa izf’k{k.k)kjk Qly ,oa lCth dh mRikndrk esa vk’kkfrr o`f) ह ईA ukMsi ,oa dsapwvka Vkadk fuekZ.k ls dkcZfud [kkn )kjk Hkwfe dh moZjk 'kfDr esa o`f) ह ईA eqxhZ ,oa cr[k ikyu] eNyh ikyu ,oa e’k:e mRiknu)kjk lhekar] y?kq ,oa Hkwfefgu fdlkuksa dh vk; ,oa jkstxkj ds voljksa esa o`f) ह ईA Lolgk;rk ,oa Lokoyacu lewgksa ds xBu )kjk Lojkstxkj ds volj miyC/k dj vk; ,oa thfodksiktZu ds lk/kuksa esa o`f) ह ईA Ikzf’k{k.k] izn’kZu] d`"kd Hkze.k] laxks"Bh] fdlku fnol ,oa esyk )kjk d`"kd leqnk; dks KkukstZu)kjk d`f"k ,oa vU; O;olk; ds ckjs esa lksp&le> ,oa rdfudh Kku ds lkFk dk;Z{kerk esa o`f) ह ईA

शासन की विभिन्न योजनाओं जैसे- शाकम्बरी पंप प्रदाय योजना, स्प्रिंकलर एवं ड्रिप सिंचाई योजना, नेशनल हार्टिकल्चर मिशन योजना, मिट्टी परीक्षण, नारियल विकास योजना इत्यादि से कृषकों को जोड़कर योजना की अनुदान राशि परियोजना मद द्धारा वहन करके अधिक से अधिक किसानों को लाभान्वित किया गया।

कार्य मूल्यांकन एवं तथ्यः-

1. भूसंरक्षण के अंतर्गत लगभग 125 हें. पड़त भूमि में सी.पी.टी., सी.सी.टी., स्टे्रेगर्ड कंटूर टेंच का निर्माण कार्य किया गया है ताकी वर्षा जल
का अधिकतम मात्रा भूमि में भंडारित कर रोपित वृक्षों को वर्ष भर जल मांग पूर्ति हो सके। वर्षा जल से भूमि कटाव द्धारा निर्मित गली एवं छोटी नालियों को बोल्डर चेक एवं अरदन
गली प्लग द्धारा संवर्धन कर लगभग 40 हे. अनुपयोगी भूमि को कृषि योग्य किया गया।

2. जल संवर्धन के अंतर्गत सतही जल संरक्षण हेतु विभिन्न आकार के डबरी, फार्म पोण्ड निर्माण रिचार्ज जोन में किया गया एवं वर्ष भर बहते नाले में पक्का नाला बंधान द्धारा द्धिफसलीय क्षेत्रफल में लगभग 25 प्रतिशत तक वृद्धि मापी गई है।

41

3. भूमिगत जल संरक्षण के अंतर्गत परकोलेशन टेंक एवं सोकपिट का निर्माण किया गया जिसके कारण वर्षा जल को रोककर भूमिगत जल स्तर को बढाया गया ताकी भूजल रिसाव द्धारा उपलब्ध मृदा नमी से रबी फसलों जैसे- अलसी, चना एवं मटर फसलों का क्षेत्रफल नगण्य से 25 हे. तक किया गया है।

4. पड़त एवं पथरिली भूमि पर जलाऊएवं फलदार पौधों का वृक्षारोपण लगभग 125 हे. में किया गया जिसके कारण भूआच्छादन क्षेत्रफल में वृद्धि हुई एवं मृदा क्षरण में कमी आंकी गई साथ ही ईंधन एवं फलों की उपलब्धता में आसानी हुई।

5. जलग्रहण क्षेत्र के लगभग 100 हे. पड़त एवं अनुपजाऊ भूमि पर स्टाईलो, दिनानाथ, एम.पी. चरी एवं सुबबुल पौधों का विकास चारागाह के उद्देश्य से किया गया।

6. फसल (75 हे.) एवं सब्जी (30 हे.) का प्रदर्शन उन्नत तकनिकी द्धारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर किया गया।

7. जलग्रहण क्षेत्र में लगभग 500 बतख, 1000 मुर्गी एवं मुर्गे तथा तालाबों एवं डबरीयों से लगभग 300 क्विंटल मछली उत्पादन किया गया है।

8. जलग्रहण क्षेत्र में लगभग 15 स्वावलंबन एवं 15 स्व-सहायता समूह का गठन विभिन्न गतिविधियों जैसे- सब्जी उत्पादन, फसल बीज उत्पादन, पशुपालन, गृह उद्योग, लाख उत्पादन, मशरूम उत्पादन, वनउत्पाद संग्रहण इत्यादि के अंतर्गत किया गया है। प्रत्येक समूह की वार्षिक आय वर्तमान में लगभग 15 से 20 हजार रू. है।

9. कृषि की उन्नत तकनिकी जैसे- कतार बोवाई, उन्नत किस्म बीज, किटनाशक, खरपतवार नाशक एवं फफूंॅदनाशक रसायनों का प्रयोग, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन द्धारा फसल सघनता का प्रतिशत 135 एवं उत्पादकता में 250 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

10. जलग्रहण क्षेत्र के समन्वित विकास कार्यो से आसपास के ग्रामीण समूदाय आकर्षित एवं प्रभावित हुये है एवं विभिन्न गतिविधियों को प्रत्येक स्तर पर क्रियान्वयन कर रहें है।